(ख) क्योंकि इस प्रकार के पूंजी निवेश के निर्णयों के फलीभूत होने में समय लगता है तथा प्रधान मंत्री के स्तर पर हुई बातचीत सामान्य है विशेष नहीं।

(ग) ब्रिटेन द्वारा भारत में पूंजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जा रहे हैं। इनमें भारतीय आर्थिक नीतियों से संबंधित सूचना का प्रचार-प्रसार ब्रोशरों तथा फ्लॉपी डिस्केट्स, विडियो कैसेट्स आदि द्वारा करना, संगोष्ठियों तथा निवेश संवर्धन प्रतिनिधि मंडलों आदि का आयोजन करना इत्यादि शामिल है। ब्रिटिश उद्योग में भारत का प्रचार करने और अधिक पूंजी निवेश खासतौर से वहां के लघु तथा मंझौले उद्योग से पूंजी निवेश आकृष्ट करने के उद्देश्य से भारत-ब्रिटिश भागीदारी उपायों को दूसरे वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है।

मधुमक्खी पालन-उद्योग में संकट

5918. **श्री अजीत जोगी :** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केरल राज्य और तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में मधुमक्खी पालन-उद्योग संकट के दौर से गुजर रहा है ;

(ख) यदि हां, तो इसके परिणामस्वरूप कितने परिवारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ;

(ग) इन परिवारों को वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराने हेतु क्या-क्या कदम उठाए गए हैं ; और

(घ) मधुमक्खी पालन-उद्योग को बचाने के लिए प्रस्तावित योजनाओं का ब्यौरा क्या है ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम. अरुणाचलम) : (क) और (ख) जी, हां। थाई साक ब्रूड बायरस रोग के कारण, केरल और तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में मधुमक्खी पालन उद्योग अत्याधिक प्रभावित हुआ है। खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग के दायरे में आने वाले परिवारों में से 29,252 मधुमक्खी पालक जिनके पास 2,42,541 कालोनियां है, प्रभावित हुए हैं।

(ग) खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग ने 2 करोड़ रुपये आवंटन करके पुनर्वास कार्यक्रम शुरू किया है और केरल तथा तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में मधुमक्खी पालकों की पुनर्स्थापना के लिए 50 लाख रुपये तदर्थ अनुदान के रूप में पहले ही मंजूर कर दिये हैं। राज्य निदेशक, खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग तिरुवंतपुरम को मधुमक्खी नर्सरियां स्थापित करने के लिए पहले ही 34.88 लाख रुपये जारी कर दिये गये हैं। बीमारी के कारण हुए नुकसान का मूल्यांकन करने और पुनर्वास कार्यक्रम की मानीटरी करने तथा इसकी प्रगति पर नजर रखने के लिए एक मानीटरिंग समीक्षा समिति का भी गठन किया गया है।

(घ) मधुमक्खी कालोनियों की संपूर्ण बरबादी को रोकने के लिए एहतियाती उपाय करने और मधुमक्खी पालकों को उक्त रोग की जानकारी कराने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा शिविर आयोजित किये गये हैं। नुकसान का अंदाजा लगाने, पुनर्स्थापना योजनाएं तैयार करने और प्रगति की मानीटरी करने के लिए एक उप-समिति का गठन किया गया है। अधिक शहद बनाने वाली "एपिस मेलीफेरा" जाति की मधुमक्खी की शुरुआत करने और संवर्धन, वृद्धि करने के लिए रोग प्रतिरोधी "एपिस सेरेना" मधुमक्खी का चयन करने तथा इन्हें मधुमक्खी पालकों को देने के लिए 24 मधुमक्खी पालन केन्द्र की स्थापना करने के लिए 34.88 लाख रुपये जारी किये गये हैं। पुनर्स्थापना प्रक्रिया को तेज करने के लिए सभी संभव प्रयास किये जा रहे हैं।